SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

स्त्रियों की पराधीनता

डॉली पाण्डेय, (Ph.D.),
अग्रसेन महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
डॉली पाण्डेय, (Ph.D.),
अग्रसेन महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 21/01/2022
Revised on : -----
Accepted on : 28/01/2022
Plagiarism : 01% on 21/01/2022

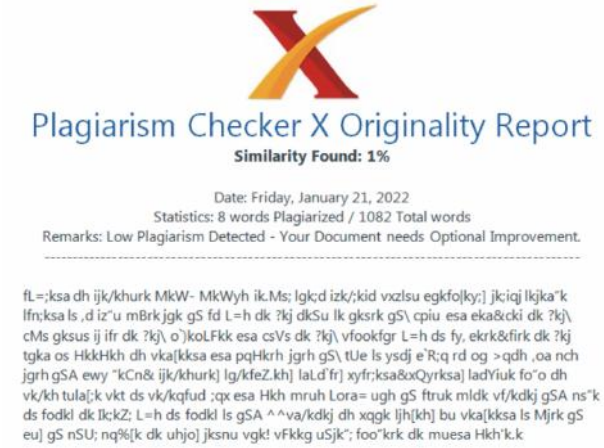
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Friday, January 21, 2022
Statistics: 8 words Plagiarized / 1082 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

fL=;ksa dh ijk/khurk MkW- MkWyh ik.Ms; lgk;d izk/;kid vxzlsu egkfo[ky;] jk;iqj lkjka"k lfn;ksa ls ,d iz"u mBrk jgk gS fd L=h dk ?kj dkSu lk gksrk gS\ cpiu esa eka&cki dk ?kj\ cMs gksus ij ifr dk ?kj\ o`)koLFkk esa csVs dk ?kj\ vfookfgr L=h ds fy, ekrk&firk dk ?kj tgka os HkkHkh dh vka[kksa esa pqHkrh jgrh gS\ tUe ls ysdj e`R;q rd og >qdh ,oa nch jgrh gSA ewy "kCn& ijk/khurk] lg/kfeZ.kh] laLd`fr] xyfr;ksa&oQyrksa] ladYiuk fo"o dh vk/kh tula[;k vkt ds vk/kqfud ;qx esa Hkh mruh Lora= ugh gS ftruk mldk vf/kdkj gSA ns"k ds fodkl dk Ik;kZ; L=h ds fodkl ls gSA ^^va/kdkj dh xqgk ljh[kh] bu vka[kksa ls Mjrk gS eu] gS nSU; nq%[k dk uhjo] jksnu vgk! vFkkg uSjk"; foo"krk dk muesa Hkh'k.k

शोध सार

सदियों से एक प्रश्न उठता रहा है कि स्त्री का घर कौन सा होता है? बचपन में मां–बाप का घर? बड़े होने पर पति का घर? वृद्धावस्था में बेटे का घर? अविवाहित स्त्री के लिए माता–पिता का घर जहां वे भाभी की आंखों में चुभती रहती है? जन्म से लेकर मृत्यु तक वह झुकी एवं दबी रहती है।

मुख्य शब्द

पराधीनता, सहधर्मिणी, संस्कृति, संकल्पना, गलतियों–गफलतों.

विश्व की आधी जनसंख्या आज के आधुनिक युग में भी उतनी स्वतंत्र नही है जितना उसका अधिकार है। देश के विकास का पर्याय स्त्री के विकास से है।

''अंधकार की गुहा सरीखी,
इन आंखों से डरता है मन,
है दैन्य दुःख का नीरव,
रोदन अहा! अथाह नैराश्य
विवशता का उनमें भीषण सूनापन।।[1]

नारी शक्ति जो माता के रूप में, बहन के रूप में, पुत्री के रूप में तथा सहधर्मिणी के रूप में परिवार व समाज का आधार रही है आज अपने ही अस्तित्व को बचाने के संकट से जुझ रही है। पुरूष, स्त्री को पराधीन मानता है। पुरूष के पराधीन केवल घर–गृहस्थी तक सीमित। इस संबंध में एक विचारक ने बहुत महत्वपूर्ण बात कही हैः ''घरेलू काम स्त्री के कर्तव्य है, परन्तु पुरूष का नाम आते ही यह काम केवल नौकर का रह जाता है, पुरूष का नही। घरेलु स्त्री गृहस्थी की प्रमुख किंतु सबसे नीचे नौकर होती है।''[2]

सामान्यता यह देखा जाता है कि परिवार में बेटी की आकांक्षा नही की जाती है, क्योंकि बेटी को तो विवाह

के बाद घर छोडकर जाना पडता है, बेटा ही तो घर आगे चलाएगा। बूढे मां–बाप को अग्नि बेटी नही बेटा देगा इसलिए बेटे की आकांक्षा और बेटी की उपेक्षा होती है।

बेटी का विवाह होते ही पत्नी के रूप में स्थापित होती है। डॉ. अमर ज्योति लिखती है ''पत्नी के उदात्त गुणों में एकतरफा त्याग, संयम, समर्पण, सेवा आदि तत्वों की पुरूष द्वारा मांग..... अब न्यायसंगत नही दिखाई देती है। पत्नी के अस्तित्व को आज मिथकीय संकल्पनाओं से मुक्त कर उसे सहज मानवीय धरातल पर स्थापित करने का प्रयास आज की लेखिकाओं ने अपने उपन्यास साहित्य में किया है। अतः नारी के पत्नी रूप का चित्रण बडी सहजता से किया जा रहा है।''[3] ''त्वमेव माता च पिता त्वमेव'' मां का स्थान प्रथम होता है। भारतीय संस्कृति में मां की उदारता की तुलना नदी से की जाती है। चंद्रकांता जी ने ''यहां वितस्ता बहती है'' में चित्रित किया है कि यहां वितस्ता को मां कहकर पूजते है, क्योकि शहर का कूडा कचरा भी इसी में डाला जाता है और शायद मां नाम इसलिए भी सार्थक हो जाता है कि बच्चों की तमाम गलतियो–गफलतो को माफ करती है और गलाजतों को खामोशी से अपने दुपट्टों से ढंक देती है।[4] अविवाहित स्त्री समाज के लिए अभिशाप मानी जाती है। उस पर लोगो की पैनी नजरे रहती है। कभी–कभी स्त्री की दुश्मन स्त्री ही हो जाती है। घर में भाभी के आने के बाद अविवाहित स्त्री को वह आंख में बाल की तरह समझती है।

अविवाहित स्त्री को बताया जाता है कि वह बेवजह घर में दखलअंदाजी करना बंद करे। अविवाहित स्त्री के पांव तले जमीन खिसक जाती है कि अब वह कौन से घर को अपना घर कहे?

स्त्री के जीवन में विधवा हो जाना अभिशाप है। विधवा स्त्री का जीवन युवावस्था से वृद्धावस्था तक संघर्षपूर्ण रहता है। जिन विधवाओं ने पुर्नविवाह किया है वे अपने जीवन को सही दिशा दे सकी है। ''नारी का विधवा रूप कई तरह से देखा गया है फिर भी एक बात सामने आती है कि नारी को विधवा जीवन बडा अखरता है। वह मात्र छटपटाती है।''[5] समकालीन स्त्री का जीवन और उनकी समस्याएँ चिंतनीय है। महिलाएँ उदारीकरण के इस दौर में घर से दफ्तर एवम् बाजार तक पहुंच चुकी है। आधुनिक नारी परिवार चलाने हेतु बाहर काम करने को विवश है।

डॉ. सुधा मलैया ने राष्ट्रीय महिला आयोग की रिपोर्ट में लिखा था कि ''बिना आर्थिक सशक्तिकरण के किसी प्रकार के महिला सशक्तिकरण की कल्पना बेमानी है। महिलाओं की प्रत्येक व्यथा, कथा के मूल में आर्थिक निर्भरता है। कहने को वह गृहलक्ष्मी है, लेकिन उसका उद्यम गिना नही जाता है।[6] स्त्रियों की योग्यता और प्रतिभा को पल्लवित होने का वह अवसर नही मिलता। स्त्री पर जितने अत्याचार ढाये जाते रहे है और मानव जाति के इतने उन्नत होने के बाद भी ढाये जाते रहे है।

स्त्री–पुरूष दोनो एक दूसरे के पूरक है किंतु स्त्री की महत्ता पुरूष से थोडी ज्यादा है। स्त्री, पुरूष को इस धरती में लाती है, उसका लालन–पालन करती है। तत्पश्चात् उसका जीवन मार्गदर्शन करती है, लेकिन पुरूष के बिना स्त्री जीवन की कल्पना व्यर्थ है। महात्मा गांधी ने भी इन दोनो की महत्ता कहा है ''स्त्री को अबला कहना उसका अपमान है। यदि शक्ति का अभिप्राय पाश्विक शक्ति से है तो स्त्री सचमुच पुरूष की अपेक्षा कम शक्तिशाली है। यदि शक्ति का मतलब नैतिक शक्तियाँ है तो स्त्री, पुरूष से कही अधिक शक्तिमान है।[7]

आज भी स्त्री, पारम्परिक संस्कारों से जकडी है परावलंबी है, आश्रित है और अभी भी अर्द्धसामंतीय संरचना के रहने के कारण स्त्री का दमन भयानक रूपों से हो रहा है। आज आवश्यकता इन स्त्री विरोधी हिंसक अमानवीय उत्पीडक, प्रभुत्वशाली परम्पराओं का विश्लेषण करने की है।

महादेवी वर्मा के शब्दों में ''नारी केवल मांसपिण्ड की संज्ञा नही है, आदिमकाल से आजतक विकास पथ पर पुरूष का साथ देकर उसकी यात्रा को सरल बनाकर, उसके अभिशापो को झेलकर और अपने वरदानों से जीवन में अक्षयशील भर कर मानव ने जिस व्यक्तित्व, चेतना और हृदय का विकास किया है, उसी का पर्याय नारी है।[8]

बाधाएँ रास्ता रोकती है, उन्हें हरा दिया जाए तो गति को पंख लग जाते है।[9]

स्त्री, वस्तु से व्यक्ति बनने की राह पर अग्रसर है। अपना जीवन मनचाहा जीने की कोशिश करती है। समसामायिक युग की नारी की सोच यह है कि, परम्पराएँ व्यक्ति के विकास में बाधक है। आज आधुनिक नारी स्वतंत्र एवं स्वच्छन्द जीवन जीना चाहती है।

डॉ. ओम प्रकाश शर्मा ने समकालीन महिलाओं में नारी मन की कसमसाहट, छटपटाहट, यौन वर्जनाओं को नकराने दैहिक और काम संबंधों की खुली स्वीकृति, दाम्पत्य संबंधों का आंतरिक सूनापन, विवाह एवं विवाहेत्तर यौन संबंध की वकालत, विवाह और प्रेम के वास्तविक सरोकारों की तलाश, कामकाजी नारी की दोहरी भूमिका आदि प्रश्नों को बडी सूक्ष्मता से उकेरा है।[10]

निष्कर्ष

स्त्री को स्त्री के प्रति ईर्ष्या की भावना को दूर करना होगा। उसे एक दूसरे की सच्ची हमदर्द बनना होगा। स्त्रियों की एकजुटता ही स्त्री की शक्ति बनकर सामने आयेगी। स्त्री शिक्षा से उसके जीवन मे नया सवेरा आयेगा। शिक्षित स्त्री परिवार समाज तथा राष्ट्र समृद्धि की पहचान है। आत्मनिर्भर स्त्री आर्थिक एवं सामाजिक स्तर पर स्वतः सुदृढ़ हो जाती है।

संदर्भ सूची

1. ऋग्वेद हिन्दी।
2. हंस पत्रिका, मार्च 2000 पृ. 80।
3. अमरज्योति, *महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारीवादी दृष्टि,* पृ.67।
4. चंद्रकांता, *यहां वितस्ता बहती है,* पृ. 02।
5. चंद्रकांता, *ऐलान गली जिंदा है,* पृ.15।
6. सिंह नीरा, *रिसर्च लिंक*–62, पृ. 132।
7. व्हौरा आशारानी, *भारतीय नारी दशा व दिशा,* पृ. 10।
8. उपाध्याय हरिशंकर, बौद्ध दर्शन।
9. महात्मा गांधी का संदेश, यू.एस.मोहनराय पृ. 42।
10. उपाध्याय हरिशंकर, बौद्ध दर्शन।

****